# मौनिबाबा

(द्रव्य -पर्याय का संवाद)

(हरिगीत)

पर्याय: मौनिबाबा मौनिबाबा बात कुछ मुझ से करो |
मैं आपकी ही जन्य हूँ, तुम जनक हो मेरे अहो॥१II
क्या नाम है, क्या उम्र है, कैसा शरीर है आपका |
है कौन बंधु-मित्र-अरि, है कोई स्वामि-दास क्या॥२II
बसते कहाँ हो, क्या पता है आपका मुझ से कहो |
कबसे बसेरा आपका, कब तक रहोगे यह कहो ॥३II
क्या रंग है, क्या रुप है, कैसा स्वरुप है आपका |
किस तरह का संबंध है, सब द्रव्य का अरु आपका॥४II
तुम मौनि हो, कुछ बोलते नहीं अत: इन सब प्रश्न का |
विनति करुँ,उत्तर कहो, अब मौन भाषा में भला॥५II

द्रव्य: मैं हूँ त्रिकाली ध्रुव, मेरा नाम ज्ञायकभाव है |
चैतन्यघन चित्पिंड शुद्धातम सभी एकार्थ हैं ॥१॥
मैं हूँ अनादि अनन्त अत: न मेरी कोई उम्र है|
मैं हूँ असंख्यप्रदेशी मेरा ज्ञानमात्र शरीर है ॥२॥
मैं हूँ स्वयं परिपूर्ण अत: न कोई मेरा स्वजन है|
नहीं बंधु कोई मित्र-अरि, नहीं कोई स्वामी-दास है॥३॥
बसता हूँ मैं मुझमें सदा मेरा पता नहीं और है|
चिरकालसे बस रहा, बसूंगा और भी चिरकाल मैं॥४॥
पुद्गग नहीं मैं इसलिये मुझमें न रंग न रुप है|
अनंत से भी अनंत गुण का एकरुप स्वरुप है॥५॥
मेरे अरु सब द्रव्य में नास्ति सभी सम्बन्ध की|
स्वाधीन सब षट् द्रव्य मेरे ज्ञेय भी होते नहीं ॥६॥
मैं जनक तेरा, जन्य तू यह कथन है व्यवहार का|
कर्ता करम तू, करण तू ही, जन्य-जनक तू ही अहा॥७॥
मैं हूँ त्रिकाली तू क्षणिका मात्र एक ही समय की|
मुझमें समा जा तू स्वयं यदि ध्रुव बनना चाहती॥८॥